Date
30/04/2020

B.Ed-IInd

Sub - Work Education, Gandhiji's Nai Talim & Community Engagement

रचनात्मकवाद की विशेषताएँ ⇒

I. रचनात्मकवाद ज्ञान के संप्रेषण एवं ग्रहण करने के स्थान पर स्वयं के प्रयत्न से ज्ञान के निर्माण पर बल देता है।

II. सीखने के लिए उचित पर्यावरण और सामूहिक क्रियाओं को आवश्यक मानता है।

III. पूर्व ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान के निर्माण पर बल देता है।

IV. ज्ञान की क्रमबद्धता और उसके पुनर्गठन पर बल देता है।

V. शिक्षार्थी को निष्क्रिय श्रोता के स्थान पर ज्ञान की खोज के लिए सक्रिय करने पर बल देता है।

VI. ज्ञान के निर्माण में शिक्षक तथा शिक्षार्थी के बीच अन्तः क्रिया होने पर बल देता है।

VII. शिक्षक को सक्रिय भागीदार और पथ प्रदर्शक के रूप में देखता है।

New Lesson → पाउलो फ्रेरा के दार्शनिक विचार

पाउलो फ्रेरा एक यथार्थवादी और मानवतावादी दार्शनिक थे। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में ही यह अनुभव किया कि उनके स्कूल में छात्र- छात्राओं में बहुत असमानता थी कोई खाने से भी रह जाता था और कोई नए-नए कपड़े से परिपूर्ण रहता इस वर्ग भेद से वो काफी प्रभावित हुए। उन्होंने अपनी पुस्तक "अल्पसंख्या से पीड़ित" (1970) में उत्पीड़कों पर अनुचित भेदभाव और अन्यायपूर्ण समाज में

समाज में पदों के बीच शोषक शोषितों के अन्तर स्पष्ट किया है। पाउले ने हीगल के समान प्रत्यक्ष रूप से पीड़ितों की शिक्षा पर ही बल नहीं दिया बल्कि इस क्षेत्र में दशा सुधारने पर विशेष बल दिया। पाउले फ्रेरा के दार्शनिक विचारों को निम्न सुझाव दिए हैं-

I. मनुष्य की सभी क्रियाएँ सोद्देश्य होती हैं। मनुष्य अपना कार्य और व्यवहार किसी न किसी आवश्यकता के कारण ही करता है। जब व्यक्ति को कोई आवश्यकता होती है तो वह प्रयास करता है और जब तक वह आवश्यकता पूरी नहीं होती तो क्रियाएँ करता रहता है।

II. मनुष्य को अपनी क्रियाओं से अनुभव प्राप्त होता है। जब वह कोई क्रिया करता है तो उसे अनुभव की प्राप्ति होती है जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास होता है और ज्ञान में भी वृद्धि होती है।

III. आवश्यकता का स्वरूप व्यक्ति की आन्तरिक प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं में विभिन्नता होती है इसलिए एक ही आवश्यकता की पूर्ति के लिए अलग-अलग व्यक्तियों के कार्यों व साधनों में भी अन्तर होता है - जैसे रुचि, प्रेरणा, मनोस्थिति थकान, शारीरिक व मानसिक शक्तियों व क्षमताओं में अन्तर पाया जाता है

IV. आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधनों का ज्ञान समाज से ही प्राप्त होता है। इसके साथ ही साधन का स्वरूप भी समाज ही निर्धारित करता है।

V. आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति वातावरण के साथ जो प्रतिक्रिया करता है वही प्रतिक्रिया शिक्षा है। इस प्रकार की आवश्यकताएँ ही व्यक्ति की शिक्षा का स्वरूप ही निर्धारित करती है। शिक्षा व्यक्तित्व विकास का कारक है। शिक्षा से ही व्यक्तित्व विकास होता है।

Scanned with CamScanner